Knowledgeable Research Vol. 1, No. 12, July 2023 ISSN 2583-6633

Knowledgeable Research
An International Open-access Peer-reviewed Journal

Vol-1, No-12, *July 2023*
Web: http://www.knowledgeableresearch.com/

फ्रेडरिक फ्रॉबेल का दार्शनिक एवं शैक्षिक चिंतन

राजीव यादव

असिस्टेंट प्रोफेसर,शिक्षक-शिक्षा विभाग, स्वामी शुकदेवानन्द कॉलेज, शाहजहाँपुर

****

शोध-सारांश

सारांशः- शिक्षा में आधुनिक विचारों से सम्बन्धित सभी श्रेष्ठ क्रियायें फ्रॉबेल द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों पर आधारित हैं। अपने समय पर इन्होंने अपने शैक्षिक विचारों एवं दूरदर्शिता से अत्यधिक प्रभावित किया। उन्होंने जीवन को अधिक सरल और स्पष्ट एवं पहचान योग्य बनाया। किण्डर गार्टन प्रणाली के रूप में फ्रॉबेल ने एक उत्कृष्ट शैक्षिक विधि की स्थापना की। जिसे लगभग सभी देशों में सार्वभौमिक रूप से मान्यता मिली। भारतीय शैक्षिक व्यवस्था में इन्हीं की शैक्षिक प्रणाली पर अधारित बाल-बाड़ियों की स्थापना की गई। उन्होंने विद्यालयों में अनुशासन की पारम्परिक विचारधारा को छोड़ने पर बल दिया। इन्होंने शिक्षा में खेल, स्व-गतिविधि, सीखने, रचनात्मक कार्यों और सामाजिक भागीदारी के महत्व पर भी बल दिया। पेस्टालॉजी के शिष्य के रूप में फ्रॉबेल ने शिक्षण के उत्कृष्ट तरीके अपनाये जिनके अनुसार ब्रह्माण्ड विकास की प्रक्रिया द्वारा उपजा है। ये शिक्षा को भी इसी प्रक्रिया का एक अंग मानते हैं।

***बीज शब्दः* पाठ्यक्रम, अनुशासन, विद्यालय।**

****

प्रस्तावनाः- फ्राबेल का जन्म 21 अप्रैल, 1782 को जर्मनी के थुरिन्नियन वन के ओवरवीस गाँव में हुआ था। इनका पूरा नाम फ्रेडरिक विल्हेम ऑगस्ट फ्रॉबेल था। इनके पिता अपने ही गाँव में पादरी थे ओर माता सामान्य ग्रहणी थीं केवल 9 माह की आयु में ही इनकी माता का स्वर्गवास हो गया। इनकी माता के स्वर्गवास के पश्चात् इनके पिता ने दूसरा विवाह कर लिया। इनकी सौतेली माँ इनकी ओर विशेष ध्यान नहीं देती थीं घर में उपेक्षा के कारण ये इधर-उधर घूमते रहते थे। परन्तु पिता के धर्म क्षेत्र से जुड़े होने के कारण इनमें धार्मिक संस्कारों की नींव अत्यधिक मजबूत थी।

ये प्रारम्भ से ही ईश्वरवादी थे। जर्मनी में इनके समय पर कान्ट, हीगल, स्पिनोजा, डेकार्टे और फिस्टे की दार्शनिक विचारधारा अपने उच्चतम स्तर पर थीं अतः स्वाभाविक रूप से इन सबका प्रभाव फ्रॉबेल पर पड़ना ही

Knowledgeable Research Vol. 1, No. 12, July 2023 ISSN 2583-6633

था। परन्तु फ्रॉबेल की अपनी स्वयं की एक दार्शनिक विचारा थी। किसी भी अन्य दार्शनिक विचारधारा के समान फ्रॉबेल की विचारधारा के दर्शन को हम तत्व मीमांसा, ज्ञान मीमांसा और आचार मीमांसा के रूप में समझने का प्रयास करेंगे।

फ्रॉबेल का दार्शनिक चिन्तनः-

तत्व मीमांसाः- फ्रॉबेल के अनुसार जीव-जन्तुओं, पेड़-पौधों आदि के विकास का आधार आत्म-तत्व है। फ्रॉबेल ईश्वर को इस सम्पूर्ण सृष्टि का प्रमुख नियंत्रणकर्ता मानते हैं। वे ईश्वर को सम्पूर्ण मानकर सृष्टि के कण-कण को उसी से विकसित मानते हैं। वे ईश्वर की इस व्यापकता को अनेकता में एकता की संज्ञा देते हैं। वे ईश्वर द्वारा निर्मित समस्त कृतियों में मनुष्य को श्रेष्ठतम कृति मानते हैं। वे मनुष्य को प्रयोजन युक्त मानते हैं तथा आत्मज्ञान को मनुष्य का सर्वोच्च लक्ष्य मानते हैं।

ज्ञान मीमांसाः- फ्रॉबेल के अनुसार इस सृष्टि की प्रत्येक वस्तु में विकसित होने की मूल प्रवृत्ति है। इस सृष्टि में उपस्थित सभी जीव-जन्तुओं एवं वस्तुओं के विकास की क्रमिक प्रक्रिया को जानना ही ज्ञान का आधार मानते हैं। फ्रॉबेल के अनुसार किसी भी प्रकार के ज्ञान की प्राप्ति अन्तःशक्तियों के बल पर ही हो सकती है।

मूल्य एवं आचार मीमांसाः- फ्रॉबेल शाश्वत नैतिक नियमों एवं मूल्यों में विश्वास करते थे। इनकी दृष्टि से नैतिकता व्यक्ति, समाज अथवा राष्ट्र सापेक्षिक नहीं होती, देश काल सापेक्षिक नहीं होती, यह ईश्वर द्वारा निश्चित एवं शाश्वत, सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक होती हैं। इनकी दृष्टि से सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम शाश्वत मूल्य है। मनुष्य का आचरण इन्हीं पर आधारित होना चाहिए।

फ्रॉबेल का शैक्षिक चिन्तनः-

फ्रॉबेल का शैक्षिक चिन्तन, कॉमेनियस, रूसो और पेस्टॉलॉजी से प्रभावित है परन्तु इनमें भी पेस्टॉलॉजी का प्रभाव प्रमुखता से नजर आता है। इनका स्वयं का प्रशिक्षण भी इन्हीं की शिक्षण विधि के अनुसार हुआ। परन्तु ये पूर्ण रूप से किसी विचारक के अनुसरणकर्ता नहीं रहे। इन्होंने स्वयं के विचारों से, स्वयं प्रयोग करके ही निर्णयों का उत्सर्जन किया और इन्हें प्रकाशित कराया।

Knowledgeable Research Vol. 1, No. 12, July 2023 ISSN 2583-6633

शिक्षा का सम्प्रत्ययः- फ्रॉबेल एक बीज में सम्पूर्ण पौधे को निहित मानते हैं अथवा बीज एक सम्पूर्ण पौधे में विकसित होने की क्षमता रखता है। फ्रॉबेल इस दर्शन को सभी जीव-जन्तुओं तथा मानवों पर भी लागू मानते हैं। इनकी दृष्टि में बालक की आन्तरिक शक्तियों को बाहर प्रकट करने की प्रक्रिया ही शिक्षा है। इनके शब्दों में "शिक्षा ही वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक अपनी आन्तरिक शक्तियों को बाहर की ओर प्रकट करता है।"

एकता का सिद्धान्तः- फ्रॉबेल शैक्षिक प्रक्रिया को ब्रह्माण्ड विकास की प्रक्रिया का अंग मानते हैं। इनके अनुसार शिक्षा ही किसी व्यक्ति को 'आत्म-चेतन व्यक्ति' बनाती है। शिक्षा ही व्यक्ति को पशुत्व से ऊपर उठाकर मनुष्य बनाती है। इनके अनुसार प्रत्येक क्रिया का एक कर्ता है जो पूर्ण है और यही आत्मा है। यही कत्र्ता भौतिक शक्ति और चिन्तन शक्ति के रूप में व्याप्त है। फ्रॉबेल इसी को 'अनेकता में व्याप्त एकता' की संज्ञा देते हैं। इनके अनुसार ईश्वर ही इस ब्रह्माण्ड में व्याप्त एकता है।

विकास का सिद्धान्तः- फ्रॉबेल के अनुसार ईश्वर ही समस्त सृष्टि में व्याप्त एकता हे। जो "आन्तरिक क्रियाशीलता" के रूप में विभिन्न आकारों एवं शरीरों के रूप में स्वयं को विकसित एवं व्यक्त करती है। अतः फ्रॉबेल आंतरिक क्रियाशीलता को विकास का मूल सिद्धान्त मानते हैं। बीज से विकसित पौधे के समान ही मनुष्य भी आंतरिक क्रियाशीलता के द्वारा उपयुक्त वातावरण के प्राप्त होते ही विकसित हो जाता हे। इस विकास प्रक्रिया के अन्तर्गत उसका कौशल विकास एवं नैतिक विकास होता है।

शिक्षा के उद्देश्यः- फ्रॉबेल के अनुसार अनेकता में व्याप्त ईश्वर रूपी एकता को जानना ही मानव जीवन का लक्ष्य एवं उद्देश्य है। फ्रॉबेल सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम को नैतिक नियम मानते हैं और इन्हीं के पालने करने से ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है। अतः वे प्रारम्भ से ही बालकों में इन नियमों के विकास पर बल देने को कहते हैं परन्तु इसके लिए वे सामाजिक जीवन को आवश्यक मानते हैं। ये सत्य एवं असत्य में अन्तर करने के लिए शारीरिक एवं मानसिक विकास को आवश्यक मानते हैं। फ्रॉबेल के अनुसार शिक्षा के यही उद्देश्य होने चाहिए। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ये उद्देश्य निम्न प्रकार होने चाहिए-

1. बालक को उसके दैवीय स्वरूप और सृष्टि की आत्मिक एकता का ज्ञान कराना।
2. बालकों का शारीरिक एवं बौद्धिक विकास करना।

Knowledgeable Research Vol. 1, No. 12, July 2023 ISSN 2583-6633

3. सामाजिक एवं नैतिक व्यवहार का प्रशिक्षण देना।
4. बालकों को नैतिक नियमों की ओर प्रवृत्त करके, चारित्रिक विकास करना।
5. दैवीय गुणों का विकास करके, पवित्र जीवन जीने का प्रशिक्षण देना।

शिक्षण विधिः- फ्रॉबेल ने मुख्यतः शिशु शिक्षा के क्षेत्र में अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। अतः उनकी शिक्षण विधि भी मुख्यतः शिशु केन्द्रित है। शिशुओं की शिक्षा हेतु इन्होंने मुख्यतः "किण्डर गार्टन प्रणाली" का विकास किया है। फ्रॉबेल की यह प्रणाली मुख्यतः निम्नलिखित सिद्धान्तों पर आधारित है-

1. इस विधि के माध्यम से वे शिशुओं में एकता का भाव उत्पन्न कराना चाहते थे। इस विधि के माध्यम से वे विभिन्नता में छिपी एकता या ईश्वर की अनुभूति कराना चाहते थे।
2. इस विधि के माध्यम से वे बालक में अन्तर्निहित ज्ञान को बाहर निकालने का प्रयास करना चाहते थे। उनका मानना था कि शिशु को ऐसा बाह्य वातावरण देना चाहिए जिससे उसका ज्ञान सही दिशा में आगे बढ़े।
3. स्वतंत्रता, विकास के सही दिशा में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक है। अतः फ्रॉबेल का मानना था कि शिशुओं के सही विकास के लिए उसे सीमित स्वतंत्रता भी देना आवश्यक है।
4. फ्रॉबेल के अनुसार बालक को आत्मक्रिया करने के अधिकतम अवसर प्रदान करने चाहिए। इनके अनुसार आत्मक्रिया किसी भी बालक की स्वाभाविक विशेषता है। जिसके द्वारा वे स्वरूचि से किसी भी काम को कर पाते हैं।
5. खेल किसी भी बालक की स्वाभाविक रुचि होती है उन्होंने शिशु शिक्षा में खेल को महत्वपूर्ण बताया है।
6. बालक में सामूहिकता की मूल प्रवृत्ति पायी जाती है जिसके कारण वह सामाजिकता की ओर अग्रसर होता है। इसी कारण फ्रॉबेल अपनी प्रणाली में सामूहिकता को विशेष महत्व देते हैं।

पाठ्यक्रमः- फ्रॉबेल, आदत निर्माण, कौशल, सत्चरित्र निर्माण आदि को विशेष महत्व देते हैं। इन्हीं को ध्यान में रखकर वे धर्म, प्राकृतिक विज्ञान, भाषा, गणित, कला बागवानी को अपने पाठ्यक्रम में विशेष स्थान देते हैं। फ्रॉबेल पहले शिक्षाशास्त्री थे जिन्होंने अपने पाठ्यक्रम में अतिरिक्त विषयों को भी महत्व दिया है। परन्तु इन्होंने

Knowledgeable Research Vol. 1, No. 12, July 2023 ISSN 2583-6633

प्रकृति निरीक्षण, खेल कुद एवं धर्म शिक्षा को विशेष महत्व प्रदान किया जबकि भाषा, गणित, विज्ञान आदि विषयों को द्वितीयक स्थान पर रखा है।

अनुशासनः- फ्रॉबेल कड़े एवं दमनात्मक अनुशासन के पक्षधर नहीं थे। वे सख्त अनुशासन के स्थान पर आन्तरिक अनुशासन को महत्व देते हैं। आत्मानुशासन से युक्त बालक बड़ा होने पर भी अनुशासित व्यवहार करेगा। वे बालक को सीमित व नियंत्रित स्वतंत्रता देने का पक्ष रखते हैं परन्तु यह स्वतंत्रता आत्मनियंत्रित होनी चाहिए।

शिक्षकः- फ्रॉबेल की शिक्षा पद्धति बाल केन्द्रित है परन्तु शिक्षक का स्थान गौण नहीं है। फ्रॉबेल शिक्षक को 'माली' की संज्ञा देते हैं। उनके अनुसार विद्यालय में शिशु एक नवजात पौधे के समान हैं और माली रूपी शिक्षक उनके लिए उचित वातावरण तैयार करता है ताकि वह सही प्रकार से पुष्पित और पल्लवित हो सके।

विद्यालयः- फ्रॉबेल विद्यालय को बाग की संज्ञा देते हैं। जहाँ का वातावरण छोटे-पौधों के अनुकूल होता है। बाग के समान ही विद्यालय का वातावरण भी शुद्ध वायु, प्रकाश आदि से परिपूर्ण होना चाहिए। वे पुरुष शिक्षकों के स्थान पर विद्यालय में महिला शिक्षकों को रखने का पक्ष रखते हैं। उनका मत है कि माली के समान शिक्षिकाओं को शिशुओं की बेहतर समझ होती है। इन्हीं विचारों को ध्यान में रखकर उन्होंने किण्डर गार्टन विद्यालयों की प्रणाली विकसित की। किण्डर गार्टन विद्यालय शिशुओं की प्रकृति को ध्यान में रखकर निर्मित किये जाते हैं।

विशेष:- फ्रॉबेल ने धनोपार्जन के लिए कई व्यवसाय किये परन्तु यह अधिक सफल नहीं हो पाये। सन् 1805 में फ्रैंकफर्ट के एक विद्यालय में इन्होंने शिक्षक के रूप शिक्षण कार्य किया। सन् 1808 में पेस्टालॉजी की शिक्षा संस्था में रहकर इन्होंने शिक्षण में प्रशिक्षण प्राप्त किया। सन् 1817 में फ्रॉबेल ने कीलहाऊ में "द यूनिवर्सल जर्मन इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन" नामक संस्था की स्थापना की। शिक्षा से सम्बन्धित इनकी प्रमुख रचनाओं में 'मनुष्य की शिक्षा', 'विकास के द्वारा शिक्षा', 'मातृ खेल एवं नर्सरी गीत' आदि हैं। सन् 1836 में यह पुनः जर्मनी वापस आ गये, जहाँ सन् 1837 में ब्लैकनबर्ग में चार से आठ वर्ष तक के विद्यार्थियों के लिए एक विद्यालय की स्थापना की और इसी का नाम इन्होंने 'किण्डर गार्टन' रखा।

Knowledgeable Research Vol. 1, No. 12, July 2023 ISSN 2583-6633

मूल्यांकनः- फ्रॉबेल ने मुख्यतः शिशु शिक्षा को अपना आधार बनाया है। मूलतः वे शिशुओं के पक्ष में प्रकृतिवादी शिक्षा को आवश्यक मानते हैं और उन्हें सीमित स्वतंत्रता देने की बात करते हैं एवं खेल आदि के द्वारा शिक्षण करने की इच्छा रखते हैं। शिशु शिक्षा के लिए किण्डर गार्टन प्रणाली अपनाने के लिए कहते हैं। वे उपहारों के द्वारा भी शिक्षा प्रदान करने का विचार प्रस्तुत करते हैं। परन्तु खेलों पर आवश्यकता से अधिक बल ज्ञान के महत्व को कम कर देता है। फ्रॉबेल की शिक्षा पद्धति शिशु शिक्षा के लिए उपयोगी अवश्य है परन्तु कई मायनों में यह भटकावपूर्ण भी है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः-

1. तरूण, डॉ. हरिवंश (2005), 'विश्व के महान शिक्षा शास्त्री', नई दिल्लीः प्रकाशन संस्थान, दयानन्द मार्ग।
2. तिवारी, प्रो. यू.एन., 'प्रमुख शिक्षा शास्त्री', इलाहाबादः नितिन प्रिन्टर्स।
3. पाण्डेय, रामशकल (1999), 'विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा शास्त्री', आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
4. पाण्डेय, रामशकल, 'शिक्षा की पृष्ठभूमि एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि'।
5. पाण्डेय, डॉ. श्रीधर एवं त्रिपाठी, डॉ. लालजी (2005), 'विश्व के प्रमुख मनीषी एवं शिक्षा दर्शन', अयोध्याः भवदीय प्रकाशन।
6. लाल, रमन बिहारी, 'शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार'।
7. शर्मा, जी.आर. (2002), 'वेस्टर्न फिलॉस्फी ऑफ एजुकेशन', नई दिल्लीः अटलांटिक पब्लिशर्स।
8. सिंह, डॉ. ओ.पी., 'शिक्षा दर्शन एवं शिक्षा शास्त्री', इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।
9. https://hindiamrit.com
10. https://www.mpgkpdf.com
11. https://www.samajkaryashiksha.com
12. https://www.socialresearchfoundation.com
13. https://www.britannica.com
14. https://frobelgifts.com